R.N.I.- UP-HIN/2001/3996
ISSN- 2581-6128

स्थापन दिवस के 25वें वर्ष में प्रवेश

शहर समता

(हिंदी साप्ताहिक)

शोध पत्र

www.shaharsamta.com

'कर्मक्षेत्र रणभूमि यही है, मानव हो तुम कर्म करो।
कर्म से कभी विमुख न रहना, मन में यह संकल्प करो।'-
उमेश श्रीवास्तव

संस्थापकः स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 श्रीमती साधना श्रीवास्तव
सम्पादकः उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक

वर्ष 25 | अंक 47 | रविवार, इलाहाबाद, 12 अप्रैल 2026 | पृष्ठ 4 | विशेषांक मूल्यः 3 रू0

❖ संपादकीय

महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक

उमेश श्रीवास्तव
संपादक

भाव सभी हैं सुंदर-सुंदर,
और विचार हैं सुंदर।
लेखन में लगता है,
जैसे आया हुआ समुंदर ।

तो बात हो रही है महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक की। लगातार चल रही महिला काव्य गोष्ठी में रचनाओं का स्तर निरंतर प्रगति की ओर है। भक्ति-भावना से लबरेज, विशेषांक में विविध प्रकार की रचनाओं का समिश्रण है। जो कभी मन को गुदगुदाते हैं तो कभी हंसाते हैं। और कभी-कभी मन को गंभीरता की ओर भी ले जाते हैं। विशेषांकों की इस श्रृंखला में लगातार विशेषांकों का निकल ना इस बात का भी संकेत है कि सृष्टि की तरह रचनाएं भी अपना शाश्वत वितान रचती हैं। जो समय के साथ सराही भी जाएगी। बस फर्क है दृष्टि का। समझने, देखने वाले लोगों की मानसिकता का। इस विशेषांक से कुछ बानगी

पहली बानगी :

मोहक मंद सुगन्ध है,मनभावन मधुमास।
हृदय हरित हर्षित हुआ, प्रियतम आए पास।।

दूसरी बानगी :

रम जाता है अंग समूचा रोली में।
अनुपम है आनंद, हमारी खोली में ।।
अलमस्ती का आलम आता झोली में।
खुशियों का कालम लिख जाता होली में।।

तीसरी बानगी :

मौसम प्रेम रंग सँग लाया।
सखी महीना फागुन आया।
रोम रोम में केसर महके।
टेसू कानन-कानन दहके।।

इस बार विशेषांक की पुरस्कृत रचना जबलपुर की कवयित्री अनीता दुबे की है । विशेषांक को देखिए और बताइए कि विशेषांक कैसा लगा । कुछ गद्य विधाएं भी हैं । अंक कैसा लगा प्रतिक्रिया जरूर दीजिए ।

अंत में

श्रृंगारित इस कविता में,
भावों का अनुराग।
देख-देख कर इसे समझिए,
कहां-कहां है पराग।

उमेश श्रीवास्तव

❖ कविताएं

ऋतुराज बसंत

आया बसंत मधुर -माधुरी,
सबके मन को भाया है।
चटख रंग धरती पर फैले,
कुदरत की यह माया है।।

कली -कली के नैन खुल गए,
घूँघट भी लहराया है।
पुष्पों का रसपान करे अलि,
मन को खूब रिझाया है।।

प्रकृति भी अब रंग बदल रही,उल्लास खूब छाया है।
धरती चहुँ पल्लवित हो रही,
सकल जीवन हर्षाया है।।

कलरव करते खग बगिया में, उमंग खूब जगाया है।
डाली-डाली डोल रही हैं, बसंत मौसम आया है।।

धरा ओढ़ती धानी चूनर, मन में प्रेम जगाया है।
बासंती मौसम ने आकर,
मन को खूब खिलाया है।।

सुषमा सिंह उर्मि

बसंती हवा में उलझती रही

फिजा भी हसीं ये बदलती रही,
नयन में नई आस जगती रही।

धरा ओढे धानी चुनर झूमें जब,
भंवर झूमे कलियां चहकती रही।

मधुमास आया सजे डालियां,
सभी तितलियां भी बहकती रही।

सजे शोख चंपा चमेली धरा,
बसंती हवा मे उलझती रही।

जगी रात रानी खिली वो सुबह,
नई जैसे दुल्हन सिमटती रही।

चूनर ओढ़े धानी ये सरसों खड़ी,
किरण भोर उषा बिखरती रही।

बहे जा रहे हैं नयन ये सजल,
विरह प्रीत आंखें बरसती रही।

नहीं आए फागुन गोरी के सजन,
मचलती वो यादें तड़पती रही।

अमवा की डाली ये बौराए मन,
बसंती फिजा मंजू महकती रही।

मंजू लता नागेश
प्रयागराज उत्तर प्रदेश

ऋतुराज बसंत

प्रकृति की निराली छटा के बिखरते ही ,
बसंती फूलों के छा जाने की आतुरता के संग ,
मां सरस्वती की वीणा की मधुर झंकार से ,
ज्ञान की गंगा के आशीष से दूर हो अंधियारा ।

ठंडी बसंती हवा का बहना ,
फूलों की भीनी खुशबू का आना ,
मन करता पकड़ लूं आकाश की बांहें ,
और साजन तक संदेशा भेजूं ।

साजन तो छोड़ परदेस को गये ,
एक आस अब भी बाकी है ,
शिशिर ऋतु में जाते हुए माघ के महीने में ,
वियोग में चांद का चढ़ना ये आस पूरी कर जाए ।

प्यार की बसंती बयार का तंद्रालस ,
अधरों को निःशब्द कर देता ,
गम तेरा ही बहा है पलकों से ,
छिपी प्रीत का खोल गये ये भेद सारा ।

सरिता कपूर,
गाजियाबाद

❖ पुरस्कृत कविता

ऋतुराज बसंत

वीरों से महकी महकी अमराई,
चलती बयार जैसे बजी शहनाई!
वृक्षों ने पहने लिए टेसू के गहने ,
महुये की महक में बहक उठे सपने!
कोयल कब से कर रही पुकार ,
आया मस्ती का रंगी त्यौहार!
प्रकृति के क्या कहने.....
भोर मुंडेर पर बोल रहा कागा,
गोरी ने उठकर झरोखे से झांका !
उनको होली आया खयाल,
द्वार आए ले के गुलाल!
लज्जा से गोरे कपोल हुए,
लाल फीके पड़ गए रंगों गुलाल!
रूप के क्या कहने.....
काका की ढोल पर काकी के फाग,
बदलते मौसम में घुल रही भांग!
काकी के नैनों में बरसों का प्यार,
काका ने मारी पिचकारी की धार!
नहीं आया उम्र का ख्याल,
कुछ पूछो न उनका हाल!!

अनीता दुबे

सरसी

बसंत नवरस छलके है नित,
रंगो का विस्तार।
कुसमित उपवन प्रतिपल सुंदर,
हर्षित अनुपम उपहार।।

भूल गई मैं अपने को अब,
कुछ रहा नहीं याद।
पूजन करती दिनभर मंदिर,
दूर करो अवसाद।।
सच्ची राहों पर चलने से, पग- पग मिलता प्यार।
कुसुमित उपवन प्रतिपल सुंदर,
हर्षित अनुपम उपहार।।

खिलती कलियॉ बागों मेंअब, मधुवन सुंदर गीत।
मुदित हृदय नाचे पल-पल उर,
सजल नयन से प्रीत।।
संग रहे अपना मनभावन,
निशदिन खुशियॉ द्वार।
कुसमित उपवन प्रतिपल सुंदर,
हर्षित अनुपम उपहार।।

ऋतु बसंत में बहती मधुमय,
शीतल मंद समीर।
बागों में कलियॉ खिली,
चंचल हुआ कबीर।।
पीत रंग से स्वागत करती,
वसुधा लेकर हार।
कुसुमित उपवन प्रतिपल सुंदर,
हर्षित अनुपम उपहार।।

उमा मिश्रा प्रीति

ऋतुराज बसंत

भुइयाँ के अचरा हरिया गे
आमा के झाड़ लकदक बौरा गे
जाड़ा ह इति उती कोन डहर नंदा गे
काबर के ऋतुराज बसंत ह प्रगटा गे
घाम के ताप ह गरमा गे
कोयल के कूक ह सुना गे
सरसों के खेत पियूरा गे
काबर
के ऋतुराज बसंत ह प्रगटा गे

फाग के मंडली बैठा गे
टूरी के गाल ह ललिया गे
मनखे के हाथ म गुलाल आगे
काबर
के ऋतुराज बसंत ह प्रगटा गे

डॉ अर्चना जैन 'अन्वेषा '
मंडला

शुभ - बसंत

' पीली - पीली सरसों फूली
मन में ख़िली उमंग है,
फूलों की सौगाते लेकर
आया मधुर बसंत है त्त
नव पराग नव कोपल फूटी,
खिलने लगी है डाली - डाली,
उपवन महके बगिया महकी
फलने लगी है हर डाली,,
ऋतु बसंत को लेकर
ज़ब भी मौसम, जीवन में आया
चहूँ दिशा फल फूल रही है,,
और सबका मन है हर्षाया त्त
दुआ यही है मेरे मन में
तुम भी चहको, तुम भी महको,
ख़िली रहे खुशियाँ जीवन में
तुम भी नभ पर, बसंत बनकर महको
बसंत बनकर महको ।।

प्रतिमा दीवान
धमतरी छत्तीसगढ़

बसंत ऋतु(गीत)

अमिया की डाली पे कोयल कूके,
बौर लागे लगी,हरसाये
चले लगी पुरवईया ऐसे,
जियरा हौले हौले गुनगुनाये।

मस्त हो कर जोगनिया नाचे
जैसे बहे प्रेम रस धार,
कूक कूक कर कोयलिया गाये,
सतरंगी लागे यह संसार।

मनवा डोले, मंद मंद मुस्काये,
नैन झुकाये, गोरी लागे शरमाये,
हर्षित मनवा, नाचत गाये
जब आये यह बसंत ऋतु बहार।

डॉ शिवानी मिश्रा
प्रयागराज

बसंत आया रे

बसंत आया रे, रंग लाया रे,
सूनी धरती को हँसाया रे।
पीली सरसों झूम-झूम कर,
खेतों में सपना सजाया रे।

कोयल बोली कुहू-कुहू,
आम्र-मंजरियाँ महक उठीं।
डाल-डाल पर पत्तों ने,
नई कहानी कह दी।

हवा में घुली फागुन की,
मीठी-मीठी सी तान है।
हर दिल में उमंग जगी,
हर चेहरे पर मुस्कान है।

नभ में सूरज सुनहला,
धरती ओढ़े पीली चूनर।

❖ कविताएं

प्रकृति गाए प्रेम गीत,
सज उठे जीवन का आँगन।

बसंत आया रे, रस बरसाया रे,
मन के कोने-कोने महकाया रे।

सुनीता गुप्ता

बासन्ती दोहे

मोहक मंद सुगन्ध है,मनभावन मधुमास।
हृदय हरित हर्षित हुआ, प्रियतम आए पास।।

सरसों पर आने लगे,फूलों के रत्नेश।
आँखों को भाने लगे ,बासन्ती परिवेश ।।

रातें छोटी हो चलीं,बढ़ा, घटा दिनमान।
सर्दी जाने के लिए, बाँध रही सामान।।

तुलना करने के लिए, मिला नहीं उपमान,
धरती झूमे ओढ़कर, बासन्ती परिधान।

धरा सुंदरी ओढ़ कर पीत हरित परिधान,
सरसों देकर कर रही, प्रियतम का सम्मान।

खेतों में उड़ने लगी,मदमाती मधु गंध।
कोयल,भौंरे ,तितलियाँ,अधिक हुए स्वच्छंद। ।

पीत वसन पहने हुए, पुहुमी पुलकित प्राण।
स्वागत में ऋतुराज के,पका रही पकवान।।

सरसों टेसू खिल गए, महक उठा है बौर।
रंग रंग बिखरा पड़ा, यह फागुन का दौर।

पीत वर्ण मंजुल छटा, यह सरसों के फूल।
खेतों में बिखरी हुई, जैसे स्वर्णिम धूल।।

घर बाहर मधुमास की,उठने लगी सुवास।
पुरवाई की मार से,विरहन हुई उदास।

ऋतुबाला रस्तोगी

वास्तविक प्यार

प्यार नाम नहीं केवल वासनाओं का
प्यार नाम नहीं केवल कामनाओं का

प्यार नाम है केवल त्याग और बलिदान का
प्यार नाम है केवल तप और दान का

प्यार नाम है केवल निस्वार्थ सेवा का
प्यार नाम है केवल दया और करुणा का

प्यार नाम है केवल हर प्राणी से लगाव का
प्यार नाम है केवल दो विपरीत ध्रुवों के सच्चे मिलन का

प्यार नाम है केवल दो आत्माओं के मिलन का
प्यार नाम है केवल रोग निवारक औषधि का

प्यार नाम है केवल तन ,मन और वाणी स्वस्थ रखने का
प्यार नाम है केवल शिव (कल्याण) और शक्ति का
प्यार नाम है केवल परमात्मा से मिलन का

साधना खरे
हर्षवर्धन नगर ,
मीरापुर ,प्रयागराज

वैलंटाइन डे पर

सच्चा प्रेम अलंकरण नही आत्मा का अनुबंध होता है।
जो हर परिस्तिथि में धैर्य और समर्पण से बंधा होता है।।

न कोई दिवस न कोई उत्सव उसका प्रमाण होता है।
सच्चा प्रेम तो नित्य जीवन का मौन संस्कार होता है।।

जहाँ विश्वास की नींव और सम्मान की दीवारें हो
वही प्रेम समय की हर परीक्षा में अमर होता है।।

वैलंटाइन डे केवल एक दिन नही।
सच्चा प्रेम तो उम्र भर का अहसास होता है।।

वैलंटाइन डे केवल तिथि है भावो का उदघोष।
सच्चप्रेम तो जीवन भर का संयम और संतोष।।

अफ़रोज़ अज़ीज़
दिल्ली

बसंत आया

सुंदर, कुसुमित फूलों से धरा का रूप सजाने को
देखो ऋतुराज बसंत है आया सबका मन हरषाने को

खिली खिली फूलों की कलियां डालों पर मुसकाती हैं
प्रकृति अपना नेह निमंत्रण देकर मन हुलसाती है
शीतल मन्द पवन है चलती खुशबू को सरसाने को
देखो ऋतुराज..........

गेंदा, गुड़हल, गुलमेंहदी महक रही गुलकेली है
चौसर,चंपा,चुमुल, चांदनी फूली और चमेली है
देखो गुलाब फूलों का राजा आया मन महकाने को
देखो ऋतुराज..........

मनभावन पावन बसंत का मौसम जबसे आया है
महका महका सा हर दिल है और धरा को सजाया है
प्रकृति ने श्रृंगार कर लिया धरणी को स्वर्ग बनाने को
देखो ऋतुराज.........

लदी हुई हर ओर है देखो फूलों से हर डाली है
शीतल मन्द सुगन्ध भरी पवन चले मतवाली है
आंगन में बैठी है कोयल सुंदर गीत सुनाने को
देखो ऋतुराज बसंत है आया सबका मन हरषाने को

अनामिका शर्मा 'अनु'
गोरखपुर, उत्तर प्रदेश

आया बसंत बाहर

आया बसंत देखो लेकर बाहर।
संपूर्ण प्रकृति कर रही है
आनंद का इजहार।

बोरो से (आम्र मंजरी) से आच्छादित है
अमवा की डाली।
अति सुंदर शोभा प्रकृति की
छटा है निराली।
कुहू कुहू बोले कोयलिया
प्रेमियों के हृदय में कर रहा
मधुर भावों का संचार।

लाल लाल पलाश वन में चहुं ओर।
मृदंग की थाप पर नाचे मन का मोर।
पीली पीली सरसों से सुसज्जित
धरती का पीला है श्रृंगार।

कलियों को चूम कर भंवरे गुनगुनाते हैं।
फूलों से लदी लताये झूम झूम जाते हैं।
हल्की हल्की चल रही है बसंती बयार।

गेंदा गुलाब और सेवंती से सजा है बाग।
प्रीतम के प्रति हृदय में जागता अनुराग।
है सुहाना मौसम प्यारा लागे यह संसार।

रेणुका पटेल
भिलाई छत्तीसगढ़

बसंत

बसंत आए ,खुशियां लाए,
पेड़ों पर फूल खिलाए।
पतंगें आसमान में उड़ें,
बच्चों के चेहरे मुस्काएं।

सरसों के खेत पीले पीले,
बौर आए आम के पेड़ झूमे।
हवा में रूमानी अदा है,
बसंत का मौसम आया है ।

प्यार की फुहार में नहाए,
दिल की बातें सब कह पाएं।
होली का रंग और पतंगों का खेल,
बसंत का त्योहार है मेल।

फागुन की हवा में गुलाल उड़े,
प्रेम की बातें दिल से जुड़ें।
बसंत ऋतु का आगमन हुआ,
खुशियों से मन मगन हुआ।

ज्योत्स्ना मिश्रा
लखनऊ

पार्वती अर्धांगरूपा शिव

पार्वती अर्धांगरूपा शिव स्वरुपा हर तरफ,
कोंपलें नव पल्लवित हो , मन लुभाया हर तरफ,

अब मदिरगंधी हो महुआ, भर रहा उल्लास है
आगमन ऋतुराज का आनंद लाया हर तरफ,

चुपके से मधुमास तन मन आज पुलकित कर गया,
मन में तरुणाई की दहकन कुनमुनाया हर तरफ,

हर कली गुंजार अलि दल, मद सुशोभित हर हृदय,
पुष्पधन्वा शर है खींचें , हो सकामा हर तरफ,

मंजरी हर आम्रपाली कूंकती शाखों में छुप,
बह सुगंधित सा पवन संदेश लाया हर तरफ,

बज रही वंशी कन्हैया अब तो जमुना तट, जहां,
दिग में हलचल रास राधा ने रचाया हर तरफ,

बावरी मीरा पुकारे,आ मेरे मनमोहना,
द्रुम सपुष्पा लोल सलिला, मन लुभाया हर तरफ,

अब 'मनोरम' चंचला मधुरा सुशोभन है धरा,
मुग्ध हृदया हो प्रफुल्लित हर्ष छाया हर तरफ,

मनोरमा श्रीवास्तव 'मनोरम'

बसंत आ गया

बसन्त आ गया , सुनो! बसन्त आ गया।
हर भाव में उमंग, उर में आज छा गया।।

कल तक निशा गम्भीर थी, हेमन्त था सबल।
हर साँस टूटती दिवा में, शीत था प्रबल।।
लो आज आस फिर बँधी, अमराई आ गई।
वासन्ती भाव ले सुबह , जयन्ती आ गई।।

बसन्त आ गया , सुनो ! बसन्त आ गया।
हर भाव में उमंग उर में, आज छा गया।।

अनमोल हर पलों को, आज तुम निहार लो।
इस जिन्दगी को हँस के,चलो तुम सँवार लो।।
हर खेत में खिली खिली, सरसों ये कह रही।
ये प्रेम का है रंग, जो अँगड़ाई ले रही।।

बसन्त आ गया,   सुनो!बसन्त आ गया।
हर भाव में उमंग उर में, आज छा गया।।

मद-मस्त सी बयार , याद संग हो चली।
दिल में युवा-सा प्यार , जो तन्हाई में मिली।
रंग-ए-बहार पथ, मधुर से गीत बन गये।
हर पंख खोल पुष्प , उर को मुग्ध कर गये।।

बसन्त आ गया , सुनो! बसन्त आ गया।
हर भाव में उमंग उर में, आज छा गया।।

आनन्द में विभोर, मन चहक चहक उठे।
मस्ती बहार शोखियाँ, अठखेलियाँ करे।।
हर धड़कनों में यार के,   पैगाम हैं भरे।
नदियाँ भी झूमती हुई, सागर में जा गिरे।।

बसन्त आ गया, सुनो! बसन्त आ गया।
हर भाव में उमंग, उर में आज छा गया।।

डॉ0 (कु0)शशि जायसवाल
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश।

गीत बसंती गाएँगे

हवा चले मद्धम मनुहारी, प्रेम ध्वजा फहराएँगे ।
पीली पीली सरसों फूली, गीत बसंती गाएँगे।।

ठंड कड़ाके की अब बीती, छटा सुहानी छायी।
सुप्त पेड़ पौधे सब जागे, लावण्या मन को भायी।।
मानव पशु आह्लादित होते, दुःख दर्द बिसराएँगे।
पीली पीली सरसों फूली, गीत बसंती गाएँगे।।

सजी मंजरी अमराई में, मृदु सुरभित उपवन होता।
जप तप पूजन करते प्राणी, हृदय दिव्यता में खोता।।
लदे बाग फूलों से सारे, भ्रमर यहाँ   मँडराएँगे।
पीली पीली सरसों फूली, गीत बसंती गाएँगे।।

चिड़ियाँ चहकें कोयल कूके, कानों में मधु सा घोले।
कण-कण हर्षित हो धरती का,सुखदायी बातें बोले।।
पर्वों का मौसम है आया, खुशियाँ खूब मनाएँगे।
पीली पीली सरसों फूली, गीत बसंती गाएँगे।।

सीमा वर्णिका,
कानपुर

परिछन गीत

बसहा पर एलै सवार हो
गौरा के सजनमा
भूत प्रेत लागल दुआर हो
मैना के अंगनमा ।।

हुलसैत मैना परिछन चलली -2
साँप छोड़ल फुफकार हो
डरि गेली मैना
बसहा पर एलै सवार हो
गौरा के सजनमा ।।

हिम नरेश के कोमल कन्या
वर के माथ गंगा के धार हो
देखैत लागै नीको ना
बसहा पर एलै सवार हो
गौरा के सजनमा ।।

हाथ जोड़ि गौरा
शिव के मनावथि
इहो भेष लिया उतारि हो
नाथ लाज राखू ना
बसहा पर एलै सवार हो
गौरा के सजनमा ।।

अर्चना **झा अन्नू**
दिल्ली

सजल

अलख निरंजन शम्भु शिव , नाम -जाप है सार।
महादेव जब साथ हों, मिलती शांति अपार ।।

निर्गुण शिव की चेतना , उज्ज्वल ज्ञान प्रकाश ।
मन जब शिव में लीन हो , मिट जाए अँधकार ।।

सुख दुख के हर मोड़ पर , शिव देते हैं ज्ञान ।
निर्मल मन की साथना, जीवन का आधार ।।

आदि - अंत से हैं परे, तुंग श्रृंग पर वास ।
शुभ कारी शिव देव प्रभु, गले सर्प मुड़ हार।।

तीन नेत्र त्रिपुरारि के, चंद्र सुशोभित भाल ।
दिव्य रूप शिव देव का, पूज सदा सब प्यार ।।

डॉ कुमकुम शुक्ला
जबलपुर

शिव ब्याह

डम- डम डमरू बजाओं, शिव ब्याह रचाने चलें
सज-धज हो ओं तैयार, शंकर ब्याहनें चलें ।।

आया शिवरात्रि, बनेगी गौरा शिव जी की पत्नी
चम- चम अंगना पूराओं, मंडप फूलों का सजवाओं
पग महावर लो खिले,भोले ब्याह रचाने चलें ...

ताल पर लगा रहे ताल देखो सारे भूत औ बेताल
अरे भक्तों ! तन पर मल लो तुम भस्म और गुलाल
छोड़ो बैर अब नए-पुरानें, भोले ब्याह रचाने चलें ...

नाचों-गाओं,खुशियां मनाओं, हाथी-घोड़े सब सजवाओं
जटा सवारो गंगा,शीश चमकाओ चन्दा,विषधर हार लगाओं
धरती-अंबर सब बाराती बने, भोले ब्याह रचाने चलें...

सुनीता जौहरी
वाराणसी

ॐ की शक्ति

ॐ का जाप करो तुम प्रतिदिन
ॐ में है आत्मिक शक्ति।
ॐ है वो उच्चारण
जिससे होती शिव की भक्ति ।।
ॐ स्रोत है ऊर्जा का
जो मन सात्विक कर जाता है।
ओम के उच्चारण से तो
हर मनुष्य शांति पाता है ।।
ॐ से ही यह सृष्टि बनी है
ॐ ही जग का संचालक।
ॐ में है वह शक्ति
जो बुरी प्रवृत्ति का है मारक।।
ॐ है एक ऐसी ध्वनि
जो हृदय से उच्चारित होती।
यह वो काम कर जाए
जो न करे पोथी - पतरी ।।

सुनीति केशरवानी'नीति'
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

शिव भजन

फागुन में इस बार ,बुलावा आया है,
भोले बाबा ने, काशी में बुलाया है।

काशी बाबा विश्वनाथ की ,पावन नगरी है,
द्वादश ज्योतिर्लिंग में ,होती इनकी गिनती है।
शिव अभिषेक की, महिमा भी भारी है,
गंगा तट पर आरती की, शोभा न्यारी है।

फागुन में इस बार बुलावा आया है....

यहां दूर-दूर से यात्री ,चलकर आते हैं,
भोले बाबा के चरणों में, शीश नवाते हैं।
मन मांगी मुरादे ,वो यहां पर पाते हैं,
बाबा विश्वनाथ की ,महिमा के गुण गाते हैं।

फागुन में इस बार बुलावा आया है....

कावड़िया कावड़ लेकर ,यहां आते हैं,
बाबा को ,जल अभिषेक कराते हैं।
जन्म मरण से मुक्ति, यहां पर पाते हैं,
बाबा विश्वनाथ भव बंधन से ,पार लगाते हैं।

फागुन में इस बार, बुलावा आया है,
भोले बाबा ने ,काशी में बुलाया है...।

रंजना बिनानी **काव्या**
गोलाघाट असम

शिव शम्भू

शिव शम्भू नमामि, अनादि पते,
बृषवाहन, रूढ़, भभूति लसै।
करूणा, करूणाकर, भूरि पते,
प्रभु दुख पयोधि, नहीं बरसै।।

❖ कविताएं

हिम शैल सुता, माँ शक्ति परा,
तुमको वरने तप घोर किया।
प्रभु पाप नसावन शंकर ने,
तब अंम्बे को स्वीकार किया।।

विभु बाल चन्द्र माथे सोहे,
जटा गंगे धार प्रफुल्ल बहे।
सिति कंठ हलाहल धार लिया,
मनु, देवन पर उपकार किया।।

श्री नीलकंठ तब नाम हुआ,
रक्षित जीवन जग माहिं किया।
विषधर जयमाल, गले डाले
प्रभु तीन लोक, पग बांध लिया।।

हो आदि अनंत के नायक तुम,
दस सीश के दर्प को चूर्ण किया।।
तब हाथ जोड़कर रावण ने,
शिव तांडव स्त्रोत का पाठ किया।।

जब दर्प बढ़ा भस्मासुर का,
श्री विष्णु ने संघार किया।
जो सरल हृदय,तव ध्यान धरे,
तुमने उसका कर थाम लिया।
तुमने''''

डाः शोभा त्रिपाठी शैल्या
छत्तीसगढ़

हम जानें शिवमय, जीवन की गरिमा

हम हो जाएं शिवमय, यही है जीवन की गरिमा
हे शिव शंभू, मेरे हृदय को शिवमय बना दो
मेरे मन को मंदिर बना दो
ईर्ष्या , लोभ,माता, मोह और अहंकार मन से मिटा दो
प्रेम, दया ,भाव का मेरे मन में अलग जगा दो
अपनी भक्ति की भावना से मेरे मन को उज्ज्वल बना दो
हे जटाधारी, सत्यम शिवम सुंदरम तुम ही हो
मेरे मन को आलोकित कर दो
मेरे जीवन की गरिमा बढ़ा दो
हे त्रिपुरारी, आपकी इच्छा भी मेरी आंखों में बस जाए, ऐसी ही कृपा करना
अपने जाता के गंगाजल से मुझे पावन निर्मल कर दो
हे प्रलयंकारी एकादश अवतार रुद्र हैं
आप
सबका दुःख हरते हैं आप
आपकी महिमा है प्रचंड
आदिकाल से सृष्टि में हैं मगन
आप हो दुःखियों के प्रति दीनदयाला
सारा जग झूमता मेरे भोले के डमरू के डम डम ताल से
हे त्रिकालदर्शी, अनंत आप चेतना के कर्णधार हो
मेरे चेतना की नैया पार लगा दो
मेरा जीवन सफल हो जाए यही है आपसे मेरी प्रार्थना
स्वीकार करो है शिव शंभू अनंता
हम जानें शिवमय की महिमा
शिवमय है परोपकारी जीवन
कण-कण में हैं शिव विराजमान

डॉ मीना कुमारी परिहार
पटना, बिहार

ग़ज़ल

प्यार से रिश्तों की तुरपाई भी हो सकती है,
ज़ख्मों पर अश्क़ों की परछाई भी हो सकती है।

दुश्मनी और बढ़ाती है ये नफ़रत हरदम,
इस तरह ज़िंदगी दुखदाई भी हो सकती है।

क़ीमती वक़्त है दौलत से भी ज्यादा जग में,
क्योंकि दौलत की तो भरपाई भी हो सकती है।

भीड़ मे कोई भी चेहरा नहीं लगता अपना,
मेरी महफ़िल मेरी तन्हाई भी हो सकती है।

अपनी तक़दीर बुज़ुर्गों की दुआ पर 'रचना',
ज़ीस्त मुमकिन है कि सुखदाई भी हो सकती है।

रचना सक्सेना
प्रयागराज

शिव आराधना

जयति जय -जय शिव आराधन
करते अभिनंदन ।।

सत्य ही शिव है,शिव ही सुंदरम
भोले करते जन- कल्याणम्
विनती सुनलो हमारी शिवजी
करते हम सब करबद्ध अर्चन।।
जयति जय-जय शिव आराधन।।

शिव सम्मुख विराजे गौरा
सामने रहते नंदी , गणेशा
ब्रह्मा,विष्णु और महेश भी
करते शिवजी का पूजन।
जयति जय-जय शिवआराधन।

शिव को फूल धतूरा चढ़ाते
बेल पत्थर - सिंघाड़ा चढ़ाते
दूध दही का अभिषेक करते
और लगाते मस्तक पर चंदन
जयति जय- जय शिव आराधन।

शिव जी कैलाश पर्वत विराजे
तन मृगछाल, नग कंठ लपेटे
नर- नारी सब उपवास करते,
गाते शिव की आरती वंदन।
जयति जय-जय शवि आराधन।।

शिव की करते मन से प्रार्थना ,
पूर्ण होती सभी की मनोकामना
चरणों में करते हैं हम अपने,
भाव भक्ति पुष्पांजलि अर्पण।
जयति जय-जय शिव आराधन।
करते हैं अभिनंदन।।

आशा जाकड़

खुशियों का कालम होली में

रम जाता है अंग समूचा रोली में।
अनुपम है आनंद, हमारी खोली में ।।
अलमस्ती का आलम आता झोली में।
खुशियों का कालम लिख जाता होली में।।

जब वसंत में गोरी आती डोली में।
कंत देखता चोरी-चोरी चोली में ।।
भाववंत हो जाता हँसी-ठिठोली में।
खुशियों का कालम लिख जाता होली में ।।

चहल-पहल कर चुलबुल डोले रोली में।
मचता है हुड़दंग अमित हमजोली में ।।
बेकल बुलबुल अविरल बोले बोली में।
खुशियों का कालम लिख जाता होली में ।।

श्याम चपल खलबली किये है,
राधा फिरती प्यारी।
गली-गली में रंग भर रहा,
कान्हा देता गारी।।
श्याम-रंग छाया है राधा भोली में।
खुशियों का कालम लिख जाता होली में ।।

कली-कली बन गई सुमन है, लिए खास पिचकारी।
लली-लली हो गई है उन्मन, लोचन से ललकारी।।
ग्वाल-बाल सँग घूमे कान्हा टोली में।
खुशियों का कालम लिख जाता होली में ।।
गाँठ-गाँठ खुलती है भाँग की गोली में।
सांठ-गांठ करती है साली, होली में ।।
आनन्दित हो जाती आँख मिचौली में।
खुशियों का कालम लिख जाता होली में ।।

परदेसी वापस जब आता होली में।
बिन मौसम बादल छा जाता खोली में ।।
प्रेम-पागल हो जाता होली में।
खुशियों का कालम लिख जाता होली में ।।

पूनम पांडेय
कानपूर (उत्तर प्रदेश)

पिया संग होली

पिया बैठे सरहद पर,
मेरी होली है बेज़ार,
छत पर बैठी राह निहारूँ,
सूना है सारा घर बार।

बिन तेरे सब रंग हैं फीके,
बिन तेरे क्या है फागुन,
मुख पर हंसी लिए फिरती हूँ,
सूना है मन का आंगन।

ढोल ताशे संग जोगीरा गाएं,
मेरा मन तो है भारी,
तुम बिन सूनी लागे सैयाँ,
मुझको मेरी फुलवारी।

पिचकारी की धार न भाए,
न भाए कोई भी रंग,
मन मेरा तुझको ही ढूंढे,
भाए न कोई दूजा संग।

तुम सीमा पर सीना तान ये कहते,
मैं वतन का पहरेदार हूँ,
मैं घर की चौखट पर बहती,
नदी की सूखी धार हूँ।

मुट्ठी भर गुलाल को मैं,
अंबर में उछालूंगी,
पवन के झोंकों से कहकर,
तुझ तक उसे पहुँचा दूंगी।

जब गालों को छुए हवा,
तब थोड़ा सा मुस्काना तुम,
मेरी होली सफल हो जाएगी,
बात इतनी मान जाना तुम।

सतरंगी चूनर जो मेरी,
संदूक में संभाली है,
जिस दिन लौटोगे तुम घर,
फिर होली, दिवाली है।

उसी रोज़ मैं लगाऊंगी,
तेरे प्यार का सिंदूरी रंग,
सारा जग जल जाएगा,
देख हमारा प्रेम प्रसंग।

नीता शर्मा
शिलांग, मेघालय

बरसाने की

उत्सव है होली का धूम मची है बरसाने में।
छाया है आनंद उमंग।
रंग रसिया श्याम सांवरिया आये।
ग्वाल बाल के संग।
नटखट है नंदलाल हमारी राधा है भोरी।
बहियाँ पकड़ कलियां मरोड़े
कान्हा काहे करे बरजोरी।
भोली भाली हम ब्रज की गुजरिया
कान्हा न छेड़ो हमे ना करो तंग।
ललिता विशाखा चंद्रावली सखियां
देत मीठी मीठी गारी।
सुन सुन हर्षित ग्वाल बाल सब
श्याम के हांथ कनक पिचकारी।
भर भर कान्हा भिगोये राधे चुनरिया
सखियान के अंग अंग।
कृष्ण प्रेम का पीकर प्याला
सारी सखियां हुई मतवाली।
सुध बुध खोई प्रेम मगन सब
आज बीरज की नारी।
नीला पीला हरा गुलाबी
सब पर चढ़ गया श्याम रंग।
तन मन मेरा भी रंग गया श्याम रंग।

रेणुका पटेल

बसंत उत्सव

रंग खेलो गुलाल यलो सखियों
होलियारों की टोली आई है।

उड़त गुलाल रंग गई साड़ी।
घोलत रंग भरी पिचकारी।
कुछ मन की बात कहो सखियों।
होलियारों की टोली आई है।

भंग के रंग चढ़े दद्दा पर।
नाचत आज गिरे गद्दा पर।
फागुन मनुहार करो सखियों।
होलियारों की टोली आई है।

हिल मिल गले मिले सब साथी।
गुझिया पापड़ को भरमाती।
कांजी और बड़ा बनाओ सखियों।
होलियारों की टोली आई है।

संतोष मिश्रा दामिनी
प्रयागराज।

आया फागुन लेकर होली

मौसम प्रेम रंग सँग लाया।
सखी महीना फागुन आया।
रोम रोम में केसर महके।
टेसू कानन-कानन दहके।।

कंचन किरणें लगती कैसी।
फूली सरसों सोने जैसे।
झूमे है गेहूं की बाली।
देखो हवा चली मतवाली।।

बासंती चोली में धरती।
सांसों में कस्तूरी भरती।
संयम टूट रहा है सारा।
भँवरा कलियों पर दिल हारा।।

कुमकुम केसर संग उड़े हैं।
अखियां अंखियों संग लड़े हैं।
प्रेमी गीत प्रीत के गाते।
रास रंग में वो रम जाते।।

आया फागुन लेकर होली।
मिलकर खेलेंगे हम जोली।
मस्तानी टोली आई है।
सतरंगी होली लाई है।।

अनुराधा गर्ग दीप्ति,
जबलपुर

'शारदे वंदना'

मां शारदे प्रेम भरो, भर दो ज्ञान उजास।
अज्ञानता हर लीजिए, जागे सत्य प्रकाश।।

वीणा वादिनी वरदानी, वाणी भरो मीठास।
मन मंदिर में बसी रहो, दे दो बुद्धि विश्वास।।

हंस वाहिनी शारदे, दो विनता सुविचार।
शब्द सधे हो सत्य से, मिटे शक्ल अंधकार।।

तेरी कृपा स्नेह से, सफल हो प्रयास।
जय-जय हे जगदंबिका, चरणन करूं निवास।।

सुनीता मिश्रा
देहरादून

शहर समता - ब्यूरो प्रमुख

देहरादून ब्यूरो - निशा अतुल्य, -91 98378 94997
जबलपुर ब्यूरो -अनीता दुबे -91 78696 43222
जौनपुर ब्यूरो - डॉ मधु पाठक,-91 94151 69522
हैदराबाद ब्यूरो -रीना प्रदीप कुमार,-91 70935 29183
भिलाई ब्यूरो - संध्या चंदेल,-91 99934 42579
गोरखपुर ब्यूरो - सरिता सिंह - 96282 04228
दिल्ली ब्यूरो - अफरोज़ अजीज, -91 96439 68797
तिनसुकिया गोलाघाट ब्यूरो - रंजना बिनानी, - 91 94355 15469
प्रयागराज ब्यूरो - गीता सिंह 94152 13851
चंडीगढ़ टच्ई सिटी - प्रभजोत कौर -91 76969 19159
इंदौर ब्यूरो - आशा जाकड़,-91 97549 69496
शिलांग ब्यूरो - नीता शर्मा -91 98630 29640
बिलासपुर ब्यूरो -संगीता बनाफर-91 70003 39148
रायपुर ब्यूरो - सीमा निगम,-91 78694 58122
कानपुर ब्यूरो - श्रद्धा श्रीवास्तव ,73765 45711
भोपाल ब्यूरो - साधना शुक्ला -91 94256 52547
जगदलपुर इकाई - स्मृति मिश्रा 'रीति'-91 93004 31143
बनारस ब्यूरो - सुनीता जौहरी, -91 6386 869 055
विश्वनाथ इकाई - सैयदा आनोवारा खातुन- 91 96787 72219
बिजनौर ब्यूरो - त्र-तुबाला रस्तोगी,-91 98971 11416
धमतरी ब्यूरो - श्रद्धा कश्यप -91 6265 018 551
बैंगलूरु ब्यूरो - अंजू भारती -91 84709 77659
गोडा ब्यूरो - सरिता कपूर -91 73768 96768
सुल्तानपुर ब्यूरो - माधवी शुचि -91 83170 45106
नोएडा ब्यूरो - प्रवीणा त्रिवेदी -91 85060 60468
पटना ब्यूरो - आ. मीना परिहार -91 70708 00416
लखनऊ ब्यूरो - अपर्णा गुप्ता --91 97933 18465
मंडला ब्यूरो - डॉ अर्चना जैन -91 93007 55500
भीलवाड़ा इकाई - डॉ राजमति पोखराना 81046 39622

संस्थापक
स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 साधना श्रीवास्तव

सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
आरएनआई नं0 UPHIN/2001/3996

उप संपादक
डा0 अरूण कुमार मिश्रा
संजय सक्सेना
रचना सक्सेना

Mo. 9005239332
Email-shaharsamta@gmail.com

स्वत्वाधिकारी/मुद्रक/प्रकाशक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा इण्डियन प्रेस (पलि.) प्रा0लि0, 36 पन्ना लाल रोड, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए, (अनन्त भवन) कर्नलगंज, इलाहाबाद से प्रकाशित।

इस अंक के प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा समस्त विवादों का निपटारा इलाहाबाद न्यायालय में ही होगा।

❖ गद्य

आधुनिक तकनीक - ए आई

कमला अपनी कहानी के रजिस्टर को लेकर पास के साइबर कैफे में गई । साइबर कैफे का मालिक उसके बेटे उज्जवल का परम मित्र था। उज्जवल तो विदेश में नौकरी करने चला गया। अपनी वृद्ध मॉं को अकेला छोड़कर। कमला जी विदेश जाना भी नहीं चाहती थी?

अकेले घर में खाली बैठे हुए बागवानी करती थी और कहानी लिखती थी,अपने जीवन के उतार-चढ़ाव की। मन में एक विचार आया कि चलो अमन से बात करते हैं।

कमल जी तैयार होकर तुरंत अमर के कैफे में पहुंची। कमल जी को देखकर अमन ने कहा- 'नमस्ते आंटी आप थोड़ी देर बैठ जाइए मैं कुछ फोटो को एडिट कर रहा हूं। बस थोड़ी देर में ही काम खत्म हो जाएगा, फिर आपकी बात सुनता हूॅं।'

वे किनारे रखी कुर्सी में बैठ गई उनके बगल में एक 15 साल की लड़की नेट पर कुछ मैटर सर्च करवा रही उन्होंने देखा प्रसिद्ध हिंदी के रचनाकारों की पिक्चर थी, इसलिए उनकी जिज्ञासा बढ़ी। उन्होंने पूछा बिटियाः 'हिंदी के इन कलम के सिपाहियों के बारे में क्या जानती हो?'

'नहीं आंटी पर मैं इनके बारे में नहीं जाना चाहती स्कूल में मुझे फेमस राइटर के बारे में प्रोजेक्ट बनाने को दिया है।'

कमल जी ने कहा -'बेटा यदि तुम जाना चाहो तो मेरे पास किताबें हैं तुम लेकर प्रोजेक्ट बना सकती हो।'

'हम इंटरनेट यूजर हैं, हमें दिमाग लगाने की कोई जरूरत नहीं है।'

आंटी मेरा नाम खुशी है आप मुझे बिटिया न कहें ,मैडम ने कहा है प्रोजेक्ट बना है अंकल सभी की फोटो निकाल कर बढ़िया सा एक प्रोजेक्ट मुझे बनाकर 1 घंटे में दे देंगे। इधर-उधर भटकने की और मेहनत करने की मुझे क्या जरूरत है? कमल जी की ओर देखकर उस लड़की ने बोला -'जाने कहाॅं-कहाॅं से आ जाते हैं सलाह देने के लिए।'

कमल जी को बहुत दुःख हुआ क्योंकि वे सब उनके पसंदीदा लेखक थे वे क्या करती इसीलिए चुप हो गई।

लड़की खुशी ने कहा- अमन अंकल मेरी फोटो तो आपने सब एडिट कर दिए अब एक लेख के साथ अच्छा सा प्रोजेक्ट बना दीजिएगा, वीडियो भी बना दीजिएगा बिल्कुल ऐसा लगे मैं ही बोल रही हूॅं। 2 घंटे बाद में आकर ले जाऊंगी एक पेन ड्राइव सब से कर दीजिएगा पैसे आपके पूरे मिल जाएंगे।

अमन ने कहा -'चार हजार में बढ़िया बन जाएगा।'

उसे लड़की ने कहा ठीक है और गाड़ी स्टार्ट करके चली गई।

कमल जी नेकहा-'अमन बेटा आजकल बच्चे पढ़ाई-लिखाई कुछ नहीं करते तुम्हारे पास आते रहते हैं इसीलिए इतनी भीड़ है।'

अमन बोल-' हां आंटी आजकल सभी बच्चों के मोबाइल हाथ में है इंटरनेट भी है सारे सवालों के जवाब पूछते हैं। '

कमल जी ने कहा- ' बेटा फिर इन बच्चों का दिमाग कैसे चलेगा जब किताब पढ़ कर प्रोजेक्ट नहीं करेंगे तो?'

अमन ने कहा-'अरे !आंटी आजकल सारे बच्चे बदल गए हैं, छोटे-छोटे बच्चे भी आर्टिफिशियल टेक्नोलॉजी का उपयोग करते हैं।'

'ठीक कह रहे हो अमन कमल जी ने गंभीर स्वर में कहा। '

कमला जी की आंखों में आंसू आ गए रोते हुए उन्होंने कहा-

'आजकल किसी के अंदर कोई भावना और इमोशन नहीं है रिश्ते भी बदल गए हैं।'

'हाथ में एक छोटा सा जादू पकड़ लिया है मोबाइल नामक राक्षस।'

सारा कुछ इसी में देखते आजकल लोग एकाकी हो गए हैं,इसी के जरिए लोगों को उल्लू बनाकर पैसे भी मांगते हैं कुछ दिन पहले बेटा डिजिटल क्राइम के विषय में सुना था।

क्या कोई इस आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का इलाज नहीं करता?

अमन ने कहा-'आंटी अभी तो दुनिया इसी पर चल रही है जाने कितने युवाओं की नौकरी भी जा रही है भविष्य में देखते हैं क्या होगा?'

कमला जी ने कहा -' बेटा अमन तुम तकनीकी के काम करते-करते हो और हम बुजुर्गों की बात तो सुन लेते हो।'

भगवान इस आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के जादू से हम सबको बचाए मैं ऐसी प्रार्थना करूंगी।

जय हिंद जय हिंदी

उमा मिश्रा प्रीति
जबलपुर मध्य प्रदेश

ए आई और हमारी बदलती जीवन शैली

अभी तक कई तरह के युग एवं उसमें हुए अनेक तरह के परिवर्तन बारे में सुना भी और पढा भी

जिसमें सामूहिक रूप से, तर्कसंगत रूप से अच्छी अच्छी बातों पर, ग्रंथों पर सारगर्भित चर्चा होते हुए पाया , जिससे कि हमारी बुद्धि और समझ के अनुसार अलग - अलग स्तर पर मानसिक विकास हुआ लेकिन

अब कृत्रिम बुद्धिमत्ता का युग आ गया है या हमनें ही इसे चुना है । इस तकनीक ने हमारे जीवन को सरल बनाने को ठान लिया है जिससे हमारे जीवन शैली में गहरा परिवर्तन देखने को मिलेगा । कृत्रिम सुविधा की आदतों ने हमें धीरे - धीरे अपने शिकंजे में लेना शुरू कर दिया है ।

पहले जहाँ हम छोटे-छोटे कार्यों के लिए अपने मन को मना के, समझा बुझा के तैयार करते थे वह काम आज एक क्लिक में हो जाता है। सोचने - समझने और फैसला लेने की शक्ति हमारे अंदर खत्म सी हो रही है और साथ ही शारीरिक गतिविधि भी कम हो रही है जिससे हम आलस्य की तरफ बढ रहे हैं । इस तकनीकी के शिकार होते हुए हम लोग लंबे समय तक स्क्रीन के सामने बैठे रहते हैं जिससे हमारा स्वास्थ्य बुरी तरीके से प्रभावित हो रहा है। आज-कल मानसिक स्तर पर परिवर्तन स्पष्ट दिखने को मिल रहा है। जब हर प्रश्न का उत्तर तुरंत मिल जाए , सोचने व तर्क करने की जरुरत ही ना लगे तो आलस्य तो अपना जगह बनाएगा ही । अब किसी भी समस्या , सुझाव या किसी भी बात के बिना कारण जाने , बिना उसका आंकलन किए , बिना उसकी गहराई में उतरे हम लोग ँद के द्वारा तैयार किया गया उत्तर को सहर्ष स्वीकार करने लगे हैं , जबकि पहले हम दस बार अपनी ही बातों पर विचार करते थे फिर किसी तजुर्बेकार - बुद्धिमान महानुभाव के पास जाते थे , उनसे राय विचार लेते थे जिससे हम समाजिक और मानसिक दोनों ही स्तर पर सुदृढ और सशक्त होते थे , इसे यूँ कहें कि यह कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने हमारी विश्लेषणात्मक क्षमता को लगभग खत्म कर दिया है ।

इससे अभी तो सिर्फ समाजिक और व्यवहारिक लगाव , आदर और जिज्ञासा प्रभावित होती दिख रही है लेकिन वह दिन दूर नही जब इससे हमलोग भावनात्मक रूप से प्रभावित होंगे । पहले समाज फिर परिवार प्रभावित होगा इससे , और इतना प्रभावित होगा कि हर व्यक्ति अपने भीतर एक अकेलापन महसूस करने लगेगा । भविष्य में ऐसा देखने को मिल सकता है कि जो चीज अभी समय और सोच की बचत लग रही है वही चीज मानसिक रोग को जन्म देगा ।

यह समस्या केवल कृत्रिम बुद्धिमत्ता का नहीं है बल्कि यह तो कम समय , कम मेहनत में अच्छे परिणाम चाहने की इच्छा का है जिसको हमने अपना जीवनशैली बना लिया है ।

एक लाईन में कहूं तो - यह नकल करने का एक यंत्र है और नकल हमारे लिए कभी भी अच्छा नही था ।

इससे बचने का हमारे पास एक ही उपाय है -

हम लोग समझदारी के साथ इस तकनीक को केवल एक साधन के रूप में उपयोग करें , ना कि स्वामी के रूप में इसको अपना स्वामित्व हमारे उपर स्थापित करने दें , तो ही हम फिर से समाज मे , परिवार में और खास कर के अपने जीवन में वही संतुलन बना पाएंगे अन्यथा हम तन्हाई की आगोश में धीरे - धीरे जाते रहेंगे जहाँ पर कई सारी बिमारियाँ हमारी राह देख रही है .....

अर्चना झा अन्नू

ए आई

कल तक जो बातें विज्ञान कथाओंका हिस्सा लगती थीं, आज वे हमारे ड्राइंग रूम का हिस्सा हैं। 'एलेक्सा' से गाना सुनवाने से लेकर, दफ्तर के जटिल ईमेल ड्राफ्ट करने तक, AI (Artificial Intelligence) हमारे जीवन की धड़कन बन गया है। लेकिन क्या हमने गौर किया है कि इस तकनीक ने हमारी जीवन शैली की तासीर ही बदल दी है?

सुविधा और संवेदनशीलता का संतुलन

AI ने निस्संदेह हमें 'सुपरह्यूमन' बना दिया है। आज भाषा की दीवारें गिर चुकी हैं क्योंकि अनुवादक पलक झपकते ही संवाद मुमकिन कर देते हैं। बीमारियों का निदान अब सटीक है, और शिक्षा हर किसी की जेब में समा गई है। हमारी जीवन शैली अब 'प्रतीक्षा' से 'तत्परता' की ओर बढ़ गई है। हमें अब जवाब के लिए हफ्तों इंतज़ार नहीं करना पड़ता, सब कुछ एक क्लिक की दूरी पर है।

जहाँ एक तरफ AI ने हमें दुनिया से जोड़ा है, वहीं दूसरी ओर इसने हमारे 'एकांत' को 'अकेलेपन' में बदल दिया है।

अब हम यह तय नहीं करते कि हमें कौन सी फिल्म देखनी है या कौन सी किताब पढ़नी है; यह एल्गोरिदम (ँदुदेगूप्स) तय करता है। हमारी पसंद धीरे-धीरे 'मशीनी सुझावों' के अधीन होती जा रही है।

लेखन, पेंटिंग और संगीत–जो कभी विशुद्ध मानवीय भावनाएं मानी जाती थीं–अब वहां भीँद का दखल है। यह डरावना भी है और रोमांचक भी। यह हमारी जीवन शैली को और अधिक 'प्रतिस्पर्धी' बना रहा है, जहाँ हमें अपनी मानवीय संवेदनाओं को मशीन की दक्षता से ऊपर साबित करना होगा।

आज (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) वह सब कुछ कर रहा है जो पहले सिर्फ इंसान कर सकते थे–जैसे कविता लिखना, चित्र बनाना या धुनें तैयार करना।

AI एक आग की तरह है–यदि इसे सही ढंग से नियंत्रित किया जाए, तो यह हमारे जीवन के अंधेरों को रोशनी से भर देगा, लेकिन यदि हम इस पर पूरी तरह निर्भर हो गए, तो यह हमारी मौलिकता को झुलसा भी सकता है। भविष्य उसी का है जोँद को अपना 'मालिक' नहीं, बल्कि एक 'कुशल सहायक' बनाकर चलेगा।

आज ही मैंने एक अखबार में खबर पड़ी के सिखों के ऐतिहासिक गुरुद्वारा श्री हरमंदिर साहिब में किसी ने आई के द्वारा एक शख्स को दरबार साहब में जूता पहने हुए दिखाया है जो की बिल्कुल गलत है।

जैसे हमने स्कूलों में पढ़ा है कि विज्ञान हमारे लिए लाभदायक के भी है और नुकसानदायक भी है पर इन दोनों का असर हमारी समझ के अनुसार ही हम पर पड़ता है अगर हम आई का सही इस्तेमाल करें तो यह हमारे लिए वरदान है

प्रभजोत कौर जोत,
मोहाली

एआई और हमारी बदलती जीवनशैली

वर्तमान युग को यदि 'प्रौद्योगिकी का युग' कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। विशेषकर कृत्रिम बुद्धिमत्ता अर्थात एआई ने हमारे जीवन के लगभग हर क्षेत्र को प्रभावित किया है। कभी जो कार्य केवल मनुष्य की बुद्धि और अनुभव पर निर्भर थे

आज वे मशीनें भी सीखकर करने लगी हैं। एआई ने न केवल हमारे काम करने के तरीकों को बदला है, बल्कि हमारी सोच, आदतों और जीवनशैली को भी नया रूप दिया है।

सबसे पहले यदि शिक्षा की बात करें तो आज ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म, स्मार्ट क्लास और एआई आधारित ऐप विद्यार्थियों को उनकी क्षमता के अनुसार अध्ययन सामग्री उपलब्ध करा रहे हैं। व्यक्तिगत मार्गदर्शन अब केवल शिक्षक तक सीमित नहीं रहा। स्वास्थ्य क्षेत्र में भी एआई रोगों की पहचान, रिपोर्ट विश्लेषण और उपचार की योजना बनाने में सहायक बन रहा है। इससे समय की बचत हो रही है और सटीकता बढ़ रही है।

दैनिक जीवन में भी एआई की उपस्थिति स्पष्ट है। मोबाइल फोन के वॉयस असिस्टेंट, ऑनलाइन शॉपिंग के सुझाव, सोशल मीडिया की फ़ीड–सब एआई के ही उदाहरण हैं। अब लोग अपनी पसंद, रुचि और आवश्यकता के अनुसार सामग्री प्राप्त कर रहे हैं।

कार्यस्थल पर भी स्वचालन (ँदर्दूदह) के कारण कई काम तेजी से और कम लागत में पूरे हो रहे हैं।

हालाँकि, एआई के बढ़ते प्रभाव के साथ कुछ चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। रोजगार के क्षेत्र में परिवर्तन, मानवीय संबंधों में दूरी और तकनीक पर अत्यधिक निर्भरता चिंता का विषय है यदि हम हर निर्णय मशीनों पर छोड़ देंगे, तो हमारी स्वयं की सोच और रचनात्मकता प्रभावित हो सकती है। इसके अतिरिक्त, डेटा सुरक्षा और गोपनीयता भी एक महत्वपूर्ण प्रश्न बनकर उभरी है।

अतः आवश्यकता इस बात की है कि हम एआई को साधन के रूप में अपनाएँ, न कि उसके अधीन हो जाएँ । संतुलित उपयोग और नैतिक दृष्टिकोण ही हमें इस नई तकनीक का सही लाभ दिला सकता है।

निष्कर्ष एआई हमारी जीवनशैली को अधिक सुविधाजनक और आधुनिक बना रहा है, परंतु इसके साथ सजगता और विवेक भी उतना ही आवश्यक है। यदि हम तकनीक और मानवीय मूल्यों के बीच संतुलन बनाए रखें, तो भविष्य और भी उज्ज्वल हो सकता है!!

अनीता दुबे

ए आई और हमारी बदलती जीवन शैली

आर्टिफिशियल इन्टेलिजेंस (कृत्रिम बुद्धिमत्ता) दो शब्दों(आर्टिफिशियल और इन्टेलिजेंस) से मिल कर बना है। जैसा कि शब्द से ही लग रहा है, कृत्रिम बुद्धि मनुष्य की मूल बुद्धि से प्रतियोगिता नही कर सकती है, क्योंकि आर्टिफिशियल इन्टेलिजेंस संकीर्ण इन्टेलिजेंस होती है और मनुष्य की मूल बुद्धि सामान्य बुद्धि होती है जो व्यक्तियों की समग्र संज्ञानात्मक क्षमता या मानसिक सामर्थ्य है, जो विभिन्न कार्यों में उनके प्रदर्शन को प्रभावित करती है। इस संबन्ध में वैज्ञानिक शोध भी हो चुके हैं और अन्ततः यही पाया गया की कई क्षेत्रों में कृत्रिम बुद्धि मनुष्य की मूल बुद्धि का सामना नही कर सकती। अतः कृत्रिम बुद्धि के द्वारा अचानक उत्पन्न प्रतिकूल परिस्थतियों को संभालना मुश्किल हो जाता है क्योंकि उसमें अनुभव की रिक्तता की वजह से व्यावहारिक बुद्धि नही होती किंतु मनुष्य में अनुभवजनित मूल बुद्धि होने की वजह से उस प्रतिकूल परिस्थित को संभालने की क्षमता होती है। अतः संज्ञान (पर्यावरण में किसी चीज़ पर ध्यान देना, कुछ नया सीखना, निर्णय लेना, भाषा को समझना, पर्यावरणीय उत्तेजनाओं को महसूस करना और समझना, समस्याओं को हल करना और स्मृति का उपयोग करना) व रचनात्मक गतिविधियाँ (कल्पना, मौलिकता, नवीन विचार, जैसे चित्रकला, लेखन, संगीत, या समस्या-समाधान की क्षमता) की पूर्ण रूप से कमी होती है। ऐसी परिस्थित को समझने में आर्टिफिशियल इन्टेलिजेंस असफल है किन्तु ऐसी स्थिति को मनुष्य की मूल बुद्धि ही हल करने में सक्षम है। यद्यपि, कुछ क्षेत्रों में जैसे विशिष्ट डेटा-संचालित कार्य, आर्टिफिशियल इन्टेलिजेंस (गणना, डेटा पैटर्न पहचान, संरचित खेल जैसे शतरंज) मानव बुद्धि को मात दे देती है।

अतः हमारा संशय कि आर्टिफिशियल इन्टेलिजेंस मनुष्य के स्वाभाविक जीवन जीने के लिए घातक होगा, गलत है। 70 या 80 वीं दशक में जब हम 'विज्ञान, एक वरदान है या अभिशाप' पर लेख लिखते थे, तब भी हम दोनो पक्ष पर लिखते जरूर थे परंतु सकारात्मक विचारों से अधिकांशतः ओत-प्रोत होता था किंतु नकारात्मक विचारों को अधिक महत्व नहीं देते थे। अतः विज्ञान जैसे-जैसे प्रगति करता गया हम उसके सकारात्मकता की ओर ही ध्यान देते गए और विज्ञान के अभिशाप को भी जाने-अनजाने मनुष्य अपने जीवन में स्वीकार करता चला गया। और उसी का दुष्परिणाम हम आज अपने बिगड़ते हुए स्वास्थ्य व पर्यावरण में देख रहे हैं।

आर्टिफिशियल इन्टेलिजेंस, विज्ञान की प्रगति की एक शाखा है जिसको लेकर आज की उपभोक्तावाद पीढ़ी में जीवन के हर स्तर पर अमल में लाने की होड़ लगी है, लेकिन आज की बौद्धिक पीढ़ी विज्ञान के शुरूआती दौर में उसके बेलगाम उपयोग से जो स्वास्थ्य व पर्यावरण की अपूर्णीय क्षति हुई है, उसके प्रति बहुत सजग है। यदि विज्ञान की यह शाखा मनुष्य को पूर्ण रूप से पंगु बनाने की क्षमता रखती है, वहीं इस सिक्के के दूसरे पहलू आर्टिफिशियल इन्टेलिजेंस के सही इस्तेमाल से न केवल हम अपने जीवन व पर्यावरण को बेहतर बना सकते हैं बल्कि हम विज्ञान के अभिशाप की वजह से जो खो चुकें हैं उसे दुबारा पाने का रास्ता तय कर सकते है।

जहां तक मनुष्य के जीवन की गुणवत्ता के सुधार का संबंध है वहां आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का प्रयोग करने में कोई बुराई नहीं है। यह एक ऐसी तकनीक है, जो मशीनों और कंप्यूटरों को इंसानों की तरह सोचने, सीखने,समस्या-समाधान करने और जल्द-से-जल्द निर्णय लेने में सक्षम बनाती है, जिससे वे ऐसे जटिल कार्य कर सकें जिनके लिए पहले समय का अपव्यय होता था। कृत्रिम बुद्धिमत्ता विभिन्न उद्योगों और अनुप्रयोगों में कई लाभ प्रदान करती है--जैसे बार-बार दोहराए जाने वाले कार्यों का स्वचालन, डेटा से अधिक और तेजी से जानकारी प्राप्त करना, बेहतर निर्णय लेने की क्षमता, मानवीय त्रुटियों में कमी, चौबीसों घंटे सातों दिन उपलब्धता। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के द्वारा हम बीते हुए वर्षों में उभरी अवधारणाओं को एक श्रृंखला के रूप में रख कर यह जान सकते हैं, कि मौजूदा हालात उन्हीं से, जो एक दूसरे से जुड़ी हुई या व्युत्पन्न हुई हैं। इसी प्रकार, कृत्रिम बुद्धिमत्ता की सहायता से विभिन्न डेटा के आधार पर पर्यावरण के संबंध में भविष्यवाणियां या निर्णय लिए जा सकते हैं।

ऐसा नहीं है, कि आर्टिफिशियल इन्टेलिजेंस के प्रयोग में चुनौती नहीं है। एआई से मिले जवाबों में गलतियां हो सकती हैं, जिससे मानव सभ्यता को बहुत बड़ी चुनौती का संघर्ष करना पड़े। यह सांख्यिकीय भेदभाव का एक रूप है, लेकिन यह भेदभाव तब आपत्तिजनक हो जाता है, जब यह विशेषाधिकार प्राप्त समूहों को व्यवस्थित रूप से लाभ पहुंचाता है और कुछ वंचित समूहों को व्यवस्थित रूप से नुकसान पहुंचाता है, जिससे विभिन्न प्रकार के नुकसान हो सकते हैं। यह डाटा की निष्पक्षता को बढ़ावा दे सकता है और यह तभी संभव जब विशेषज्ञ डेटा संग्रह और मॉडल डिज़ाइन में इसके द्वारा पूर्वाग्रह को कम कर सकें। अतः इसका प्रयोग सिर्फ मानव कल्याण के लिए ही हो।

कुछ वर्ष पूर्व ही आर्टिफिशियल इन्टेलिजेंस हमारे जीवन में कैसे घुसपैठ कर गया, हमें पता ही नही चला। इसका जीवंत उदाहरण है सिरी और एलेक्सा जैसे वर्चुअल वॉयस असिस्टेंट, नेटफ्लिक्स या यूट्यूब पर आपकी पसंद के आधार पर सुझाव देने की अनुशंसा प्रणाली, बिना मानवीय हस्तक्षेप के चलने वाली स्वचालित कारें, टेक्स्ट, इमेज या वीडियो बनाना इत्यादि।

संक्षेप में हम कह सकते हैं की मानव बुद्धि असंरचित, कथा, और सहानुभूतिपूर्ण संदर्भ में श्रेष्ठ होती है, जबकि आर्टिफिशियल इन्टेलिजेंस संरचित, उच्च डेटा, और दोहराव वाले संदर्भ में श्रेष्ठ होती है। अतः, आर्टिफिशियल ईन्टेलिजेंस मशीनों को स्मार्ट बनाती है, ताकि वे इंसानों की तरह सोच सकें और काम कर सकें, जिससे विभिन्न क्षेत्रों में दक्षता और नई क्षमताएं आती हैं।

सरिता कपूर,
गाजियाबाद